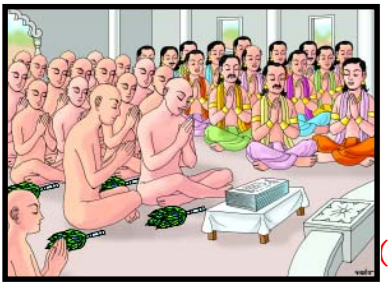

(E - 114)
नमो देवी वागेश्वरी

(सोरठा)

ओंकार धुनिसार, द्वादशांग वाणी विमल;
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरै।

(भुजंगप्रयात)

जिनादेशजाता जिनेन्द्रा विख्याता, विशुद्धप्रबुधा नमो लोकमाता;
दुराचार दुर्नेहरा शंकरानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी।१।

सुधाधर्मसंसाधनी धर्मशाला, मुधाताप निर्नाशिनी मेघमाला;
महामोहविध्वंसनी मोक्षदानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी।२।

अखैवृक्षशाखा, व्यतीताभिलाषा, कथा संस्कृता प्राकृता देशभाषा;
चिदानंद–भूपालकी राजधानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी।३।

समाधानरूपा अनूपा अछुद्रा, अनेकांतधा स्याद्वादांकमुद्रा;
त्रिधा सप्तधा द्वादशांगी बखानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी।४।

अकोपा अमाना अदंभा अलोभा, श्रुतज्ञानरूपी मतिज्ञान शोभा;
महापावनी भावना भव्यमानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी।५।

अतीता अजीता सदा निर्विकारा, विषैवाटिकाखंडिनी खड्गधारा;
पुरापापविक्षेपकर्तृकृपाणी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी।६।

अगाधा अबाधा निरंध्रा निराशा, अनंता अनादीश्वरी कर्मनाशा;
निशंका निरंका चिदंका भवानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी।७।

अशोकामुदेका विवेका विधानी, जगज्जंतुमित्रा विचित्रावसानी;
समस्तावलोका निरस्तानिदानी, नमो देवी वागेश्वरी जैनवानी।८।